विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 16 नवंबर 2020

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

कारक विभक्तिः तथा उपपद विभक्तिः

अधोदत्तेषु वाक्येषु विभक्ति-प्रयोगम् अवलोकयत। [नीचे दिए गए वाक्यों में विभक्ति का प्रयोग

(क)

अहं कलमेन लिखामि।

छात्राः पठनाय गच्छन्ति।

पत्राणि वृक्षात् पतन्ति ।

(ख)

सीता रामेण सह वनम् अगच्छत् ।

सूर्याय नमः ।।

बालः गृहात् बहिः क्रीडति ।

उपरिलिखित वाक्यों में, रेखांकित शब्दों में लगी विभक्ति का क्या कारण है? आइए समझें। (Let us understand दोनों खण्डों में वाक्य-संख्या (1) में तृतीया विभक्ति, वाक्य-संख्या (2) में चतुर्थी तथा वाक्य-संख्या (3) में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है, किन्तु प्रयोग का कारण भिन्न हो या है। कारक विभक्तिः तथा उपपद विभक्तिः

उपरिलिखित वाक्यों से स्पष्ट है कि विभक्ति का प्रयोग दो बातों पर आधारित है

कारक

उपपद

वाक्य में प्रयुक्त शब्द का, वाक्य में आई क्रिया से जो सम्बन्ध होता है, उसके अनुसार शब्द में जो विभक्ति लगती है, उसे कारक विभक्ति कहते हैं; यथा–क्रिया के कर्ता में प्रथमा, क्रिया के कर्म में द्वितीया इत्यादि।

जो विभक्ति, वाक्य में प्रयुक्त किसी उपपद (पद-विशेष) के कारण लगती है, वह उपपद-विभक्ति कहलाती है; यथा-'सह' के योग में तृतीया, 'नमः' के योग में चतुर्थी आदि।

कारक-विभक्तिः

1. कर्ता कारक-(NominativeCase)

राधिका गच्छति। -राधिका-कर्ता-प्रथमा विभक्तिः

कर्ता = वाक्य में आई क्रिया को करने वाला (Agent of the action/Subject of the sentence)